श्रीभगवानुवाच।
लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्।।३।।

श्रीभगवान् उवाच=भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा; **लोके**=लोक में; **अस्मिन्**=इस; **द्विविधा**=दो प्रकार की; **निष्ठा**==निष्ठा; **पुरा**=पूर्व में; **प्रोक्ता**=कही गयी हैं; **मया**=मेरे द्वारा; **अनघ**=हे निष्पाप; **ज्ञानयोगेन**=ज्ञानयोग से; **सांख्यानाम्**=सांख्य-वादियों की; **कर्मयोगेन**=भक्तियोग से; **योगिनाम्**=भक्तों की।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे निष्पाप अर्जुन! मैं पहले कह चुका हूँ कि स्वरूप-साक्षात्कार करने वाले पुरुष दो प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ तो श्रीभगवान् को जानने के लिए सांख्ययोग में प्रवृत्त रहते हैं, जबकि दूसरे भक्तियोग से उनका ज्ञान प्राप्त करते हैं।।३।।

तात्पर्य

द्वितीय अध्याय के उनतालिसवें श्लोक में श्रीभगवान् ने 'सांख्ययोग' तथा 'कर्मयोग' अथवा 'बुद्धियोग'—इन दोनों पद्धतियों का उल्लेख किया है। इस श्लोक में वे उसी का अधिक विशद वर्णन कर रहे हैं। मनोधर्म तथा अनुभवसिद्ध ज्ञान-दर्शन में प्रवृत्त हुए व्यक्तियों के लिए सांख्ययोग उपयुक्त है। दूसरे प्रकार के मनुष्य कृष्णभावनाभावित कर्म करते हैं, जैसा द्वितीय अध्याय के इकसठवें श्लोक में कहा है। उनतालिसवें श्लोक में श्रीभगवान् ने यह भी कहा है कि 'बुद्धियोग' अथवा कृष्णभावना के अनुसार कर्म करने से कर्मबन्धन से मुक्ति हो जाती है। इसके अतिरिक्त, इस पद्धति में कोई प्रत्यवाय रूप दोष भी नहीं होता। ६१ वें श्लोक में इसी सिद्धान्त को स्पष्ट किया गया है—बुद्धियोग का अर्थ परब्रह्म श्रीकृष्ण की पूर्ण आश्रयता ग्रहण करना है। इस विधि से अनायास ही इन्द्रियदमन भी हो जाता है। अतः धर्म तथा दर्शन के रूप में दोनों योग अन्योन्याश्रित है। दर्शन-विहीन धर्म भावुकतामात्र है, जो कदाचित् धर्मान्धता में भी परिणत हो जाता है। दूसरी ओर, जो दर्शन धर्म से युक्त न हो, वह वस्तुतः मनोधर्म है। श्रीकृष्ण सभी के ऐकान्तिक लक्ष्य हैं, क्योंकि जो परतत्त्व के यथार्थ जिज्ञासु हैं वे सब दार्शनिक अन्त में कृष्णभावनाभावित हो जाते हैं। भगवद्गीता में यह भी प्रतिपादित है। परमात्मा के सम्बन्ध में अपने यथार्थ स्वरूप को जान लेना इस सम्पूर्ण पद्धति का सार है। मनोधर्म का मार्ग सीधा नहीं है, क्योंकि उसके द्वारा कृष्णभावनामृत की प्राप्ति शनैः-शनैः ही हो सकती है। परन्तु कृष्णभावना के द्वारा श्रीभगवान् से सीधा सम्बन्ध हो जाता है। प्रत्यक्ष रूप से कृष्णभावना का मार्ग अधिक उत्तम है क्योंकि वह किसी दार्शनिक पद्धति के द्वारा इन्द्रिय-शुद्धि करने पर निर्भर नहीं करता। कृष्णभावनामृत का पथ स्वयं शुद्धिकारक है तथा भगवद्भक्ति की सीधी पद्धति से युक्त होने के कारण से सुगम भी है और उदात्त भी।